ऋणनिर्देश

इसअनुसंधान के दौरान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न महाविदयालय, विद्वजन, परिवार के सदस्य एवं मित्रों का महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर उन्हें स्मरण करना आवश्यक ही नहीं तो अनिवार्य भी है। अत: उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना दायित्व एवं कर्तव्य मानती हूं।

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. आर. जी. देसाई जी के कुशल निर्देशन में संपन्न हुआ है। मैं मेरे लघु शोध प्रबंध की पूर्ति का श्रेय उनको देन ही श्रेयस्कर मानती हूं। शोध कार्य के लिए विषय चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक अपने शिष्यवत्सल और प्रेरणादायी प्रोत्साहित करनेवाले व्यवहार से मेरे उत्साह को गति देकर उन्होंने अनमोल सहयोग दिया है। उनका सम्यक मार्गदर्शन मेरे लिए संस्मरणीय तथा अनमोल रहा है। लाख कृतज्ञता ज्ञापित करने पर भी मैं उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकती। उनके प्रति आभार व्यक्त करना महज एक औपचारिकता होगी। उनके स्नेह, निर्देशन और आशीर्वाद से और भी लाभान्वित होने की निरंतर अभिलाषा करती हूं। उनके परिवार से सदैव आत्मीयता एवं प्रेरणा मिलती रही। अत: मैं उनकी भी ऋणी हूं।

हिंदी विभाग के प्रपाठक एवं अध्यक्ष श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी, आदरणीय गुरुवर्य डॉ. वसंत मोरे जी, डॉ. अशोक बाचुळकर और डॉ. गिरीश काशिद की भी मैं ऋणी हूं जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की। अत: उनके प्रति भी मैं तहेदिल से आभारी हूं।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बीना संपन्न नहीं हुआ है इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुई हूं। आज मैं जो कुछ भी हूं उन्हीं की बदौलत हूं अत: मैं इनके ऋण से उऋण होना नहीं चाहती। साथ ही मेरी बड़ी बहन 'शितल', जीजाजी 'प्रकाश निकम' तथा मेरी छोटी सहेली 'साक्षी' का सहयोग मिलता रहा। अत: मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूं।

प्रस्तुत कहानी साहित्य की लेखिका 'मालती जोशी' जी ने हमेशा मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। अत: उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं।

हिंदी विभाग के वरिष्ठ शोध-छात्र जिनसे शुरू से अंत तक मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया उनमें इन्नुस शेख, जोतिराम खर्डे, विजय शिंदे, अनघा तोडकरी इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं।

मेरे सहयोगी एवं मित्र-परिवार में रोहिणी, नीलम, अफसाना, बेबी, शोभा, महादेवी, रेज्जूला तथा हमारे छात्रावास की वार्डन श्रीमती भोसले मैंडम जिनसे हमेशा अपनी बेटी जैसा प्यार मिला। अतः इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूं।

शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय तथा वहां के सभी कर्मचारी तथा हिंदी विभाग के कर्मचारी श्री. अनिल साळोखे, श्री कृष्णात पोवार आदि की भी मैं आभारी हूं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का टंकण श्री. विनायक पाटील ने नियत समय पर आत्मीयता और लगन से पूर्ण किया। उनके हार्दिक सहयोग के लिए धन्यवाद।

इसके सिवा जिन विद्वानों, शुभचिंतकों एवं मित्रों ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा, सहयोग, परामर्श, सुझाव एवं आशीर्वाद देकर अनुग्रहित किया उन सबके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 30 जून, 2004.

कु. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील